❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj .org

वर्ष 47, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 08 जनवरी, 2024 से रविवार 14 जनवरी, 2024
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

चलो टंकारा! चलो टंकारा!! चलो टंकारा!!!

10-11-12 फरवरी, 2024 को जन्मभूमि टंकारा में होगा
ऐतिहासिक, अद्भुत, अनुपम और अद्वितीय
200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव महासम्मेलन

विशेष एवं अनूठी तैयारी : आयोजन स्थल पर जमीन को समतल कर कांटे चुनते आर्य नर-नारी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजन की तैयारी संपूर्ण भारत और विश्व स्तर पर लगातार चल रही है। सभी आर्य प्रतिनिधि सभाएं, आर्य समाजें, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, डीएवी शिक्षण संसथान, आर्य विद्यालय, आर्य अनाथालय, वानप्रस्थ आश्रम, आर्य प्रतिष्ठान, आर्य परिवार अपने अपने स्तर पर पूरी निष्ठा के साथ टंकारा पहुंचने के लिए उत्साहित हैं। और क्यों न हों उत्साहित? महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती संपूर्ण मानवजाति का और विशेष रूप से आर्य समाज का एक विशिष्ट महोत्सव जो है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनगिनत उपकार, उनके सेवा कार्य इतने अद्भुत, अनुपम और अविस्मरणीय हैं कि हम उनके ऋण से उऋण होने का कितना भी प्रयास करें किन्तु शायद कम ही होगा। सब से न्यारा ऋषि, सबसे प्यारा ऋषि, सबसे अनोखा ऋषि, सबसे अनूठा ऋषि, हमारा ऋषि, सारे जगत का ऋषि।

महर्षि दयानन्द एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने संपूर्ण मानवजाति का उद्धार करने के लिए अनेकानेक कष्ट, पीड़ा, संताप, अपमान और तिरस्कार यहाँ तक कि ज़हर पीकर भी मानव समाज को अमृत पिलाया। ऐसे महर्षि की 200वीं जयंती हम सब के लिए अपने आप में एक अद्वितीय और अनुपम अवसर है। इस अमृत बेला पर महर्षि की जन्मभूमि टंकारा में जब आर्यों का अनुपम मेला लगेगा, भारत सहित सम्पूर्ण विश्व से आर्यजन आएंगे, एक ऐसा विहंगम दृश्य बनेगा और विशाल ऐतिहासिक आयोजन होंगे, इसी भावना को लेकर टंकारा के आर्यजन सबके स्वागत की विशेष तैयारी कर रहे हैं और तैयारी का अद्भुत दृश्य तो देखिए, आयोजन स्थल पर भूमि को समतल किया जा रहा है और केवल समतल ही नहीं किया जा रहा है, उस भूमि पर पैर रखने वाले महर्षि के प्यारे भक्तो के पैर में कोई काँटा न लगे, इसके लिए आर्य नर-नारी एक एक कांटे को हाथों से चुन रहे हैं। भावना यही है कि महर्षि दयानंद ने अज्ञान-अविद्या अंधकार के कांटों को बड़े परिश्रम पुरुषार्थ, तप, त्याग, और साधना से मानव जाति को बचाया था, सामाजिक कुरीतियां जो मानवता के लिए विषैला कांटा थी, उनको अंधेरों से निकाला था, तो महर्षि के शिष्य भी कुछ उसी तरह का प्रयास कर रहे हैं, यह अपने आप में एक अद्भुत सोच है, संस्कार है, संस्कृति है और आर्य समाज की अतिथियों का स्वागत करने की विशिष्ट परंपरा है। अत: आइए, हम सब टंकारा चलने की करें तैयारी, महर्षि दयानंद की जन्मभूमि है अति प्यारी, वहाँ पर खिल उठेगी आर्य समाज की फुलवारी, महकेगा विश्व सारा वैदिक अनहद नाद से, गूंज उठेगा गगन मंडल आर्य समाज की आंदोलनकारी आवाज़ से, हर आयुवर्ग के पहुँचेंगे सब नर नारी, आओ मिलकर करें टंकारा चलने की सब तैयारी।

आयोध्या में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम मन्दिर का उद्घाटन
सोमवार 22 जनवरी, 2024 के अवसर पर
सभी आर्यसमाज, गुरुकुल, शिक्षण संस्थान एवं आर्यजन करें
दीपमाला एवं विशेष यज्ञ-भजन-प्रवचन

भारतीय वैदिक संस्कृति के शिखर पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणाओं का स्तम्भ है। 500 वर्षों से अधिक कालखण्ड के उपरान्त उनकी जन्मभूमि अयोध्या में भव्य और विशाल स्मारक (श्रीराम मन्दिर) का उद्घाटन समारोह 22 जनवरी, 2024 को माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा होना सुनिश्चित है। इस अवसर पर समस्त आर्यसमाजों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य से अनुरोध है कि अपने परिवारों एवं संस्थानों में यज्ञ, भजन और प्रवचनों के विशेष आयोजन करें। अपने संस्थानों और घरों को लाइटों एवं दीपमालाओं से सजाएं और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंगों से मानव समाज को अवगत कराने का प्रयास किया जाए।

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 14 जनवरी, 2024 दोपहर : 2:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 14 जनवरी, 2024** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **दोपहर 2:30 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय सम्मानित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्य मानुभावों को बैठक का ऐजेण्डा पत्रक व्हाट्सएप्प, टेलीग्राम एवं साधारण डाक से विधिवत् भेज दिया गया है। अत: सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य (प्रधान)
विनय आर्य (महामन्त्री)

देववाणी-संस्कृत

हम अज्ञानी

वेद-स्वाध्याय

त्वद्विश्वा सुभग सौभगान्यग्ने वि यन्ति वनिनो न वयाः।
श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्ये दिवो वृष्टिडयो रीतिरपाम्।। - ऋ० 6/13/1
ऋषिः-**भरद्वाजो बार्हस्पत्यः।।** देवता-**अग्निः।।** छन्दः-**पङ्क्तिः।।**

शब्दार्थ - **अग्ने** = हे अग्ने! **सुभग** = हे सुन्दर ऐश्वर्यवाले! **त्वत्** = तुझसे ही **विश्वा** = सब **सौभगानि** = सुन्दर ऐश्वर्य **वियन्ति** = विविध प्रकार से निकलते हैं, **वनिनः न** = जैसे वृक्ष से **वयाः** = शाखाएँ [विविध प्रकार से निकलती हैं] तुझ वृक्ष का सेवन करनेवालों को **श्रुष्टिः** = शीघ्र ही **रयिः** = भौतिक धन **वृत्रतूर्ये वाजः** = युद्ध में बल **दिवः वृष्टिः** = अन्तरिक्ष की दिव्य वृष्टि तथा **अपां रीतिः** = इन जलों को गति देनेवाली **ईडयः** = स्तुत्य ज्योति प्राप्त हो जाती है।

विनय - हम कितने मूर्ख हैं कि मूल को न सींचकर पत्तों कों पानी ने रहे हैं! हे अग्ने! तुम तो सब सौभगों के कल्पतरु हो, परन्तु हम एक तुम्हारा सेवन न कर अपनी अनगिनत इच्छाओं के, इष्ट वस्तुओं के पीछे मारे-मारे फिर रहे हैं। इस संसार में जो भी कुछ विविध प्रकार के सौभाग्य के सामान दृष्टिगोचर हो रहे हैं, जो भी कुछ सुन्दर ऐश्वर्य दीख रहे हैं वे सब-के-सब एक तुमसे ही निकले हैं, तुमसे ही सर्वत्र फैले हैं। यह विश्व अनन्त प्रकार की सुन्दर सम्पत्तियों से भरा पड़ा है उन सबके मूल में, हे सुभग! तुम ही हो। यदि हम एक तुम्हारी उपासना करें, तो हमारी शेष सब उपास्य वस्तुएँ हमें स्वयमेव मिल जाएँ, तुम वृक्ष के प्राप्त करने से शेष शाखा, डाली, पुष्प, फल आदि सब-कुछ हमें स्वयमेव प्राप्त हो जाएँ। एक तुम्हारे सुभग सेवन से हमें सब सौभग मिल जाएँ। इतना ही नहीं, किन्तु ये सौभग, ये सुन्दर ऐश्वर्य हमें ठीक प्रकार से और ठीक प्रमाण में मिल जाएँगे। जब हम तेरा सेवन करेंगे तो हमें जब जिस ऐश्वर्य की, जिस क्रम से, जिस मात्रा में आवश्यकता होगी, वह ऐश्वर्य उसी क्रम, उसी मात्रा में हमें ठीक-ठीक मिलता जाएगा और बड़ी शीघ्रता से तुरन्त मिलता जाएगा। तेरे भजनेवाले को सब भौतिक धन, उसकी पार्थिव (शारीरिक) आवश्यकताओं की पूर्ति के सब साधन शीघ्र ही मिल जाते हैं। उसे पाप के समूल नाश के लिए, पाप से लड़ने के लिए, जीवन-संघर्ष में विजयी होने के लिए जिस बल, तेज, सामर्थ्य की आवश्यकता है, वह भी ठीक समय पर मिल जाता है। इसके बाद उसे अन्तरिक्षलोक की वृष्टि, मानसिक लोक की दुर्लभ महान् सन्तुष्टि, आनन्द व तृप्ति प्राप्त हो जाती हैं और यह दिव्य वृष्टि ही नहीं, किन्तु इन दिव्य जलों की प्रेरक, इनको गति देनेवाली जो स्तुत्य जगद्वन्द्य दिव्य ज्योति है, वह आदित्य ज्योति भी अन्त में उन्हें मिल जाती है। इस प्रकार पार्थिव, आन्तरिक्ष और दिव्य (आत्मिक) एक-एक-एक ऊँचे ऐश्वर्य, सम्पूर्ण ऐश्वर्य, एक तेरा ही सेवन करते जानेवाले को पूरी तरह मिल जाते हैं। फिर भी हम मूर्ख न जाने क्यों, एक तेरे ही सेवन में नहीं लगते, एक तुझ मूल का आश्रय नहीं पकड़ते।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय | **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव - 10-11-12 फरवरी, 2024**

जन्मभूमि टंकारा (मौरवी-गुजरात) से क्या बिगुल बजने वाला है?

काल की अपनी एक पुकार होती है। हर काल की अपनी एक अलग पीड़ा होती है। इस कारण हर काल का युद्ध भी अलग होता है। जंग तलवारों से हो या विचारों से लड़ी हमेशा समूह और समाज में जाती है। आज हमारे सामने हमारे बौद्धिक जीवन में नया युद्ध खड़ा कर दिया गया है। जल जहरीला, जमीन जहरीली, नशे की गर्त में समा जाने को आतुर युवा दिख रहा है तो कहीं षड्यंत्र के तहत समाज को तोड़ा जा रहा है। नये अंधविश्वासों के जन्म के साथ मूलभूत शिक्षाओं की उपेक्षा करते हुए विदेशी भाषाओं, वैचारिक फैशनों का अंधानुकरण चल पड़ा है। शिक्षा के पाठ्यक्रमो में विदेशी कहानियाँ, विदेशी नायक खड़े किये जा रहे हैं। हमारे महापुरुषों और अनेक मनीषियों को लगभग विस्मृत कर दिया है। यहाँ तक कि समाज को दिशा देने वाले साहित्य पर भी आज अश्लीलता ने डेरा जमाया लिया है। सूचना क्रांति में अग्रणी भूमिका निभा रहे सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्म पर इन विचारों से भारतीय संस्कृति को एक किस्म से स्लोमोशन में हानि पहुंचाई जा रही है।

बात केवल पाखंड और अंधविश्वास तक सीमित रहती तो शायद टंकारा में महर्षि दयानन्द जी 200 वीं जयन्ती ज्ञान ज्योति महोत्सव मनाने की उतनी आवश्यकता नहीं होती। देश भर की आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं से सन्देश दिया जा सकता था। अन्तरंग सभाओं में चर्चा कर इससे लड़ने की बात की जा सकती थी। परन्तु आज तो चारों ओर एक षड्यंत्र सा रचा जा रहा है। नशे की लत युवाओं में तेजी से फैल रही है। जिसके चलते युवाओं का भविष्य अंधकार में हो रहा है। लेकिन यह लत भी समझनी पड़ेगी कि नशा उसके जीवन बन रहा है या किसी बाहरी षड्यन्त्र के तहत बनाया जा रहा है? कौन लोग है जो आज भारत के युवा को तबाह करने के लिए गुप्त व्यूह रच रहे है? इसी तरह आज हमारी जमीन जिसे हम माँ का दर्जा देते हैं उस जमीन को भी रासायनिक खाद डालकर उसे इतना जहरीला बनाया जा रहा है कि अब फसल के साथ केंसर, शुगर जैसी अनेकों बीमारी हमारे शरीर में प्रवेश कर रही है। जबकि स्वामी ने बहुत पहले प्राकृतिक खेती जैसा नारा देते हुए 'गोकरुणानिधि' जैसी पुस्तक लिखकर हमें चेताया भी था। किन्तु देश का भोला किसान एक षड्यंत्र के तहत विदेशी रासायनिक कंपनियों के जाल ऐसा फंसाया गया कि उसे पता नहीं चला कि कब उसकी मिट्टी जहरीली बन गयी!

इसी तरह आज देश में राजनीति एवं कुकरमुत्तों की तरह उपजते अनेक जाति-उपजातिवादी कुछेक संगठन द्वारा कई अवसरों पर आपस में बाँटने या हीनता की भावना पैदा करने का षड्यंत्र साफ-साफ़ झलक रहा है। पिछले कई दशकों से समानता, समरसता के क्षेत्र में हमने बहुत कुछ किया। किन्तु फिर भी आज कहीं जाति के कारण दुल्हे को घोड़ी पर नहीं चढ़ने दिया जाता, कहीं दुल्हन डोली में नहीं बैठ सकती। कहीं मंदिर में जाने से रोका जाता है, कहीं छू लेने मात्र से ही गंगा नहाने की परम्परा बन गई, कहीं साथ बैठकर खाने से पाप की दुहाई दी जाती है। इस षड्यंत्र पर चर्चा बहुत जरूरी है, तभी समाज में बढ़ते विघटन को रोका जा सकता है।

एक अत्यन्त ज्वलंत विषय भी आज हमारे सामने है, वह है सिकुड़ते-छोटे होते परिवार। आज अनेकों परिवार में बच्चा भी है माता-पिता भी हैं। लेकिन किसी एक के यहाँ अकेली बेटी है तो किसी के यहाँ अकेला बेटा। कुछ लोग अब 'नो चाइल्ड पॉलिसी' जैसे षड्यंत्र के तहत बच्चा ही पैदा नहीं करना चाहते हैं। इसके अलावा समाज में रिश्तो-नातो का बड़ा अकाल पड़ने वाला है। अगर अब नहीं सम्हले तो आगे चलकर देश में बुजुर्ग होंगे लेकिन युवा और बच्चे कम ही दिखाई देंगे।

अंधानुकरण मानसिकता से समाज का घोर सांस्कृतिक पतन होता जा रहा है। इसी की परिणति बच्चों समेत सबको खुले व्यभिचार की स्वीकृति देने में हो रही है। सिनेमा, विज्ञापन आदि उद्योग हमारे बच्चों, किशोरों में ब्रह्मचर्य की उलटी गतिविधियों की प्रेरणा जगाते हैं। यह हमारे सबसे अग्रणी पब्लिक स्कूलों की शिक्षा है। ऋषियों-महर्षियों समेत सभी महापुरुषों की सारी बातें को कूड़े में डालकर और विकृत भोगवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसीलिए अधिकतर लोग भोग के अलावा नितांत उद्देश्यहीन जीवन जीते हैं। लोगों को सिर्फ उत्तेजक भोजन, उत्तेजक सिनेमा, उत्तेजक विज्ञापन, उत्तेजक संगीत, चित्र, मुहावरे आदि सेवन करने को परोसे जा रहे है।

एक ओर कथित बाबा देश धर्म के नाम पर हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति की गरिमा को तार-तार कर रहे है तो दूसरी तरफ इनके कारनामों का फायदा उठाकर विरोधी धर्मांतरण करने में लगे पड़े है। युवा बहनें भी इस धार्मिक कुचक्र का शिकार बनाई जा रही है। चारों ओर चुनौती है, धर्म से लेकर शिक्षा तक संस्कार से लेकर संस्कृति तक। सामाजिक उन्नति के मूलमंत्रों और सार तत्वों का खुलेआम दहन किया जा रहा है। बचाव का कोई सहारा नहीं दिख रहा है। इस कारण इस डूबती संस्कृति को बचाने के लिए सिर्फ और सिर्फ आर्य समाज ही एक टापू के रूप में दिखाई दे रहा है।

पांचवा विषय आज समाज में दरगाहों से लेकर बंगाली बाबा, चंगाई सभा जैसे अनेको अंधविश्वास परोसे जा रहे हैं। समाज में षड्यंत्र के तहत दो वर्ग विशेष अंधविश्वास फैलाकर धर्मांतरण सरीखे कार्यों को अंजाम देने में लगे हुए हैं। जिनके प्रति अगर समय रहते समाज को जागरूक ना किया गया तो आने वाले समय में बचाने के लिए हमारे पास कुछ नहीं रहेगा।

इतना ही नहीं किशोर-शिक्षा के नाम पर एक अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय चल पड़ा है, जो यौन-रोगों को रोकने के नाम पर भारत में ऐसी शिक्षा परोसी जा रही है मानो बच्चों को यौन-सम्बन्ध तो बनाना ही है। बस, जरा 'सुरक्षित' बनाएं। आखिर इस मान्यता का आधार क्या है! यही कि किशोर बच्चे यौन-सम्बन्ध के बिना नहीं रह सकते? यह स्थिति पश्चिमी संस्कृति में हो सकती है, जो ब्रह्मचर्य चेतना से अपरिचित है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

200वीं जयन्ती के अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पुण्य स्मरण कराता योगी श्री अरविन्द घोष जी का लेख

महर्षि दयानन्द सरस्वती : उनका व्यक्तित्व और कार्य

महर्षि दयानन्द की कर्मशैली बिल्कुल भिन्न थी। वे ऐसे मानव थे जिन्होंने अपने आपको वस्तुओं की अनिर्धारित आत्मा में आकाररहित तौर पर नहीं उडेला था बल्कि वस्तुओं और मनुष्यों पर अपनी आकृति की ऐसी अमिट छाप लगा दी थी जैसे पीतल में मुहर लगा दी हो। वे ऐसे पुरुष थे जिनके साकार कार्य उनके आत्मिक शरीर से जन्मे उनके पुत्र ही थे, सुन्दर और बलिष्ठ तथा प्राण से परिपूर्ण, अपने जन्मदाता की हूबहू प्रतिच्छवि। वे ऐसे व्यक्ति थे जो निश्चित तौर पर और साफ-साफ जानते थे कि उन्हें क्या कार्य करने के लिए यहाँ भेजा गया है। उन्होंने आत्मा की प्रभुत्वपूर्ण दृष्टि से अपनी साधन सामग्री का चुनाव और कार्य की अवस्थाओं का निर्धारण किया और फिर अपने संकल्पित विचार को जन्मसिद्ध कार्यकर्ता की प्रवल, सिद्धहस्त दक्षता के साथ कार्यरूप में परिणत किया। जब मैं परमेश्वर के कारखाने के इस दुर्दम कारीगर की मूर्ति का ध्यान करता हूँ तो मेरे सामने झुण्ड के झुण्ड चित्र आने लगते हैं जो सब-के-सब संग्राम के, कर्म के, विजय के, सफलतापूर्ण प्रयास के चित्र होते हैं। तब मैं अपने-आपको कहता हूँ यह है दिव्य-प्रकाश का सैनिक, परमेश्वर के जगत् का योद्धा, मनुष्यों और संस्थाओं को बनानेवाला शिल्पकार और प्रकृति आत्मा के सम्मुख जो कठिनाइयां उपस्थित करती है उनका निर्भीक और अदम्य विजेता है महर्षि दयानन्द।

भारत की भावी संतति को अनेक लोकोत्तर महापुरुष भारतीय नव-जागरण के शिखर पर दिखायी देंगे। उनकी महामण्डली में एक व्यक्ति अपनी अनूठी और अनुपम विशेषता के कारण औरों से स्पष्ट जुदा दीख पड़ता है-अपने ढंग का अनोखा और अपने काम में भी औरों से निराला। यह ऐसा लगता है जैसे को बहुत समय तक एक कम या अधिक ऊंची पर्वत श्रृंखला के बीच घूमता रहे जो दूर तक एक विशाल परिधिवाली और हरी-भरी हो और अपनी गगनचुंबी एवं आकर्षक ऊँचाई के होते हुए भी नयनाभिराम हो, किन्तु उस श्रृंखला के बीच एक पर्वत उसे एकदम अलग-थलग दिखाई दे। उसी प्रकार, ऋषि दयानन्द ऐसे दिखाई देते हैं, मानो निरा बल ही मूर्तिमान् होकर पहाड़ के रूप में खड़ा हो गया है, नग्न और सुदृढ़ ठोस चट्टान का पुंज, विशाल और उत्तुंग। इसकी हरी-भरी चोटी पर खड़ा सनोवर का वृक्ष आकाश से बातें कर रहा है, शुद्ध, प्राणदायी और उर्वरक जल का एक सुविशाल जलप्रपात मानों उसके इस शक्ति-पुंज में से ही फूट-फूट कर निकल रहा है जो इस सारी घाटी के लिए पानी का ही क्या, स्वयं स्वास्थ्य और जीवन का भी झरना है। यह है वह छाप जो मेरे मन पर दयानन्द के व्यक्तित्व की पड़ती है।

इस महाशक्तिशाली पुनरुद्धारक और नव-निर्माता का जन्म काठियावाड़ की भूमि में हुआ था। उस विशाल भूमि की प्रकृति का, उसकी आत्मा का ही कुछ अंश इसकी आत्मा में प्रविष्ट हो गया था, गिरनार का, उसकी चट्टानों और पहाड़ का कुछ अंश, उस समुद्र की शक्ति और गर्जन का भी कुछ अंश जो घहराता हुआ इस प्रदेश के किनारों पर टकराता है। इसके साथ ही वहां की मानवता का भी कुछ अंश इसकी आत्मा में प्रविष्ट हो गया था। वहां की मानवता को प्रकृति-देवी ने अपने अकलुषित और विशुद्ध तत्त्व से बनाया दीखता है। वह शरीर से सुन्दर और बलिष्ठ है, नई-ताजी प्राणशक्ति से उज्जीवित है, अविकसित प्रकृतिवाले पुरुष में वह अपरिपक्व अवस्था में है, पर जो विकसित प्रकृतिवाले पुरुष में भव्य-निर्माण की महाशक्ति बनने की क्षमता रखती है।

जब मैं दयानन्द के विषय में अपनी भावना को अपने सामने चित्रित करने की कोशिश करता हूँ और मुझ पर उसकी जो छाप पड़ी है उसे ठीक-ठीक रूप देने की चेष्टा करता हूँ तो प्रारम्भ में इस पुरुष के, इसके जीवन और कार्य के दो महान्, सुस्पष्ट और विलक्षण गुण मेरे सामने आ खड़े होते हैं। वे गुण इसे अपने सम कालीनों और साथियों से बिल्कुल अनूठा ही प्रदर्शित करते हैं। अन्य महान् भारतीयों ने अपने आपको जाति के आध्यात्मिक उपादान में उडलेकर आज के भारत के बनाने में सहायता दी है। उन्होंने अनिश्चित-स्वरूप वाले चलायमान द्रव्य में अपनी आध्यात्मिकता को ढाला। वह द्रव्य एक दिन स्थिररूप धारण करेगा और प्रकृति के एक महान् दृश्य जन्म के रूप में सामने आयेगा। उन्होंने एक प्रकार का खमीर डाल दिया, आकाररहित हलचल और संक्षोभ की एक शक्ति दे दी जिसमें आकारों का प्रकट होना आवश्यक था। वे ऐसी महान् आत्माओं और

महा प्रभावशाली व्यक्तियों के रूप में स्मरण किये जायेंगे जो भारत की आत्मा में निवास करते हैं। वे हमारे अन्दर हैं और उनके बिना नि:संदेह हम वह न होते जो आज हम हैं। परन्तु किसी ठीक-ठीक आकार को लेकर यह नहीं कहा जा सकता है कि यह है जो उस मनुष्य का उद्देश्य था, यह कह सकना तो दूर रहा कि यह आकार ही उस आत्मा का ठीक मूर्त रूप है।

इस विलक्षण कार्य के असली नमूने के तौर पर जो बृहत् और जटिल रचना के समय नितान्त आवश्यक होता है मेरे मन के सामने महादेव गोविन्द रानाडे का दृष्टान्त आ उपस्थित होता है। यदि कोई विदेशी हमसे पूछे कि इन महाराष्ट्रीय अर्थशास्त्री, सुधारक और देशभक्त ने वह कौन सा विशेष कार्य किया है जिसके कारण तुम उन्हें अपनी स्मृति में इतना वह स्थान देते हो तो हमें उत्तर देने में कुछ कठिनाई प्रतीत होगी। हमें एक विशेष मानव-समुदाय के उन कार्यों की तरफ संकेत करना पड़ेगा जिनमें रानाडे की आत्मा और विचार एक अमूर्त निर्माता के रूप में विद्यमान है, हमें आज के भारत के उन महान् व्यक्तियों की तरफ इशारा करना पड़ेगा जिन्होंने इनकी आत्मा में आये प्राण को ग्रहण किया है और अन्त में हमें पूर्वोक्त प्रश्न का उत्तर इस प्रश्न के रूप में ही देना होगा, "भला, महादेव गोविन्द रानाडे के बिना आज का महाराष्ट्र क्या होता और महाराष्ट्र के बिना आज का भारत ही क्या होता? परन्तु जो महान् व्यक्ति, वस्तुओं और मनुष्यों पर प्रभाव डालने में इन-जैसे आकाररहित नहीं थे और जो प्रसरणशील भी थे उनके विषय में तथा उन कार्यकताओं के विषय में भी जिनकी शक्ति और कार्य अधिक स्पष्ट थे, मेरे मन पर मूलत: यही छाप पड़ती है।

यदि शक्ति की कोई आत्मा हो सकती है तो विवेकानन्द शक्ति की आत्मा ही थे, वे मनुष्यों के बीच साक्षात् सिंह थे, पर जो कुछ निश्चित कार्य वे पीछे छोड़ गये हैं वह उसकी तुलना में बहुत ही कम है जिसकी छाप उनकी रचना करने की शक्ति और सामर्थ्य के बल पर हमारे ऊपर पड़ी हुई है। हम उनके प्रभाव को अब भी बहुत बड़ी मात्रा में काम करता हुआ अनुभव करते हैं, हम अच्छी तरह नहीं जानते कि कैसे और कहां, किन्तु किसी वस्तु में जो अभी तक आकार में नहीं आई, कुछ सिंह सदृश महान् अन्त:प्रेरक ऊपर उठानेवाला प्रभाव अनुभूत होता है जो भारत की आत्मा में प्रविष्ट हो गया है और हम कहते हैं, "देखो, विवेकानन्द अपनी माता की आत्मा में, उनके पुत्रों की आत्माओं में अभी तक जीवित है।" यही बात सब महापुरुषों के विषय में है। न केवल ये पुरुष अपने निर्धारित कार्यों की अपेक्षा अधिक महान् थे, किन्तु इनका प्रभाव भी इतना विस्तृत और अगोचर था कि जो कोई ठोस कार्य ये अपने पीछे छोड़ गये हैं उसके साथ इसका कोई विशेष संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता।

महर्षि दयानन्द की कर्मशैली बिल्कुल भिन्न थी। वे ऐसे मानव थे जिन्होंने अपने आपको वस्तुओं की अनिर्धारित आत्मा में आकाररहित तौर पर नहीं उडेला था बल्कि वस्तुओं और मनुष्यों पर अपनी आकृति की ऐसी अमिट छाप लगा दी थी जैसे पीतल में मुहर लगा दी हो। वे ऐसे पुरुष थे जिनके साकार कार्य उनके आत्मिक शरीर से जन्मे उनके पुत्र ही थे, सुन्दर और बलिष्ठ तथा प्राण से परिपूर्ण, अपने जन्मदाता की हूबहू प्रतिच्छवि । वे ऐसे व्यक्ति थे जो निश्चित तौर पर और साफ-साफ जानते थे कि उन्हें क्या कार्य करने के लिए यहाँ भेजा गया है। उन्होंने आत्मा की प्रभुत्वपूर्ण दृष्टि से अपनी साधन सामग्री का चुनाव और कार्य की अवस्थाओं का निर्धारण किया और फिर अपने संकल्पित विचार को जन्मसिद्ध कार्यकर्ता की प्रवल, सिद्धहस्त दक्षता के साथ कार्यरूप में परिणत किया। जब मै। परमेश्वर के कारखाने के इस दुर्दम कारीगर की मूर्ति का ध्यान करता हूँ तो मेरे सामने झुण्ड के झुण्ड चित्र आने लगते हैं जो सब-के-सब संग्राम के, कर्म के, विजय के, सफलतापूर्ण प्रयास के चित्र होते हैं। तब मैं अपने-आपको कहता हूँ यह है दिव्य-प्रकाश का सैनिक, परमेश्वर के जगत् का योद्धा, मनुष्यों और संस्थाओं को बनानेवाला शिल्पकार और प्रकृति आत्मा के सम्मुख जो कठिनाइयां उपस्थित करती हैं उनका निर्भीक और अदम्य विजेता। यदि साररूप में कहूं तो इस सब की जो जबरदस्त छाप मुझ पर पड़ती है वह है आध्यात्मिक क्रियात्मकता की। आध्यात्मिकता और क्रियात्मकता ये दो शब्द आमतौर पर हमारी परिकल्पनाओं में एक-दूसरे से अत्यन्त विपरीत समझे जाते हैं। इन दोनों शब्दों को मिलाकर प्रयुक्त करना मुझे महर्षि दयानन्द की सही परिभाषा प्रतीत होती है।

उन्होंने जो काम किया उसका वास्तविक स्वरूप क्या वा इसे यदि हम विचार में न लायें तो भी केवल यह तथ्य ही कि उन्होंने इसी भाव से और इसी प्रयोजन से काम लिया, उन्हें हमारे महान संस्थापकों में अद्वितीय स्थान प्राप्त करा देता है। उन्होंने प्राचीन आर्य-तत्त्व को राष्ट्रीय चरित्र में फिर से स्थापित किया। यह तत्त्व हमें महर्षि दयानन्द की वह विशेषता बतला देता है जो मेरी दृष्टि में उन्हें ओरों से भिन्न करने वाला उनका दूसरा विशेष गुण है। यह दूसरा गुण पहले का रहस्य है। हम अन्य लोग प्रभावों की एक धारा में रहते हैं, इन प्रभावों

- शेष पृष्ठ 6 पर

200 वीं
सदैव सत्य
महर्षि दयानन्द सरस्वती | जयन्ती 1824-2024

आओ चलें टंकारा – सम्पूर्ण विश्व में गूंजे

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं

200 वां जन्मोत
स्मरणोत्सव

10-11-12 फरवरी, 2024 (शनि-रवि-सोम)

माघ, शुक्ल पक्ष १-२-१ वि.२०८०

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मभ

हम सबके जीवन का ऐतिहासिक अव

आर्यजनों, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जन्मोत
द्विशताब्दी में सम्मिलित होने का अवसर किसी को भी जीवन
ज्योति पर्व – स्मरणोत्सव महासम्मेलन को भव्य एवं ऐतिह
आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्यालयों, डी.ए.

आयोजन की उपरोक्त तिथियों 10-11-12 फरवरी में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखें

समस्त साथियों, अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं सहित सपरिवार पहुंचने की तैयारी अभी से आरम्भ कर लें

**महर्षि दयानन्द सर
जयन्ती के ऐतिहासि
को सफल बनाने में**

टंकारा पहुंचने हेतु साधन, मार्ग एवं उपलब्ध व्यवस्था/सुविधाएं

हवाई मार्ग – टंकारा के निकटतम हवाई अड्डा राजकोट है। राजकोट हवाई अड्डे से टंकारा की दूरी 40 किलोमीटर है। दूसरा निकटतम हवाई अड्डा अहमदाबाद है जहां से टंकारा लगभग 250 किलोमीटर है। देश के लगभग सभी स्थानों / हवाई अड्डों से इन दोनों जगह की कनेक्टिविटी है तथा इन दोनों ही स्थानों से टंकारा पहुंचने का राजमार्ग बहुत अच्छा है। राजकोट का किराया काफी अधिक होगा। अतः अहमदाबाद की टिकट लेकर टैक्सी अथवा डीलक्स बस से पहुंचना भी एक सरल माध्यम हो सकता है।

रेल मार्ग – टंकारा पहुंचने के लिए सबसे निकटवर्ती रेलवे स्टेशन राजकोट ही है। यह स्टेशन टंकारा से 45 कि.मी. की दूरी पर है। यहां से टंकारा के लिए लगातार टैक्सी और सरकारी एवं प्राइवेट बसों की सेवा संचालित हैं। कार्यक्रम के दिनों में हमारा प्रयास होगा कि राजकोट रेलवे स्टेशन से टंकारा आयोजन स्थल तक सरकारी बसों की विशेष व्यवस्था हो जाए, जिससे और भी आसानी रहे। अतः तुरन्त रेलवे टिकट ले लें, चाहे कितनी ही वेटिंग में मिले। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा।

सड़क मार्ग – टंकारा से 500-600 किमी. की दूरी (गुजरात के निकटवर्ती – राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र) में रहने वाले महानुभाव अपनी-अपनी आर्य समाज/संस्था की ओर से बसों की व्यवस्था करके भी सामूहिक यात्रा का आयोजन कर सकते हैं।

भोजन व्यवस्था – टंकारा में आयोजन स्थल पर 9 फरवरी से 12 फरवरी की रात्रि तक भोजन की पर्याप्त व निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। जो महानुभाव उसके अतिरिक्त अन्य व्यवस्था लेना चाहें उनके लिए सशुल्क स्टाल भी उपलब्ध होंगे, जिन पर व्यवस्थानुसार भोजन/नाश्ता/फास्टफूड/मिष्ठान/आदि का आनन्द भी लिया जा सकता है।

आवास व्यवस्था – टंकारा पहुंचने वाले समस्त आर्यजनों, श्रद्धालुओं के लिए आयोजन स्थल के साथ-साथ स्थानीय विद्यालयों, धर्मशालाओं, समाजवाड़ियों (पंचायती विवाह केन्द्रों) जो बहुत साफ-सुथरे और बेहतर व्यवस्था वाले हैं, में प्रत्येक व्यक्ति के लिए बैडिंग की पूर्णतया निःशुल्क व्यवस्था की जाएगी।

होटल/सशुल् –
है। जहां उपल
होटल/सशुल्क
से सम्पर्क करे
लें, शेष राशि

गणवेश – स
क्रीम या पीली
अवश्य ही धा

मौसम – गुज
है, अन्यथा दि

भ्रमण – टंक
गिर के वन,
वाटरफाल, स
करवाई जा स

एक अनुरोध
हमें हमारा आ
परेशानी या क
निवेदन है।

-: निवेदक :-

सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पद्मश्री पूनम सूरी, प्रधान
दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा एवं डी.ए.वी. कॉलेज

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उडीसा), धर्मपाल आर्य (दिल्ली), सुदर्शन शर्मा (पंजाब), राधाकृष्ण आर्य (हरियाणा), प्रकाश आर्य (म. भारत), वेद प्रकाश ग
त्रिपाठी (झारखण्ड), योगमुनि (महाराष्ट्र), ऋषिमित्र वानप्रस्थी (कर्नाटक), जगदीश प्रसाद केडिया (बंगाल), संजीव चौरसिया (बिहार), महेन्द्र सिंह राजपू
अरुण चौधरी (ज.-कश्मीर), दीपक ठक्कर (गुजरात), सत्यानन्द आर्य (परोपकारिणी), अशोक आर्य (उदयपुर), गोपाल बाहेती (अजमेर), जोगेन्द्र खट्टर (
चड्डा (दिल्ली), विनय आर्य (दिल्ली), वाचोनिधि आर्य (गुजरात)

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक

सभी पाठकों, अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि सोशल मीडिया – व्हाट्सएप्प, फेसबुक, एक्स, टेलि

विश्व में गूंजेगा दयानन्द का जयकारा – आओ चलें टंकारा

जी की 200वीं जयन्ती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

जन्मोत्सव–ज्ञान ज्योति पर्व
त्सव महासम्मेलन

रस्वती जन्मभूमि, टंकारा, जिला–राजकोट (गुजरात)

तिहासिक अवसर – आइऐ, इस महान अवसर के साक्षी बनें

जी का 200वां जन्मोत्सव एक ऐतिहासिक अवसर है। किसी महापुरुष की जन्म शताब्दी अथवा र किसी को भी जीवन में दोबारा प्राप्त होना सम्भव नहीं है। अत: इस अवसर पर आयोजित इस ज्ञान न को भव्य एवं ऐतिहासिक बनाने के लिए समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, प्रमुख आर्य संगठनों, लों, विद्यालयों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थानों से अनुरोध है कि –

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के ऐतिहासिक स्मरणोत्सव समारोह को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाएं

अपना रेलवे आरक्षण तुरन्त करा लें, चाहे कितनी भी वेटिंग हो। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, ग्रुप में कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा

होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था – टंकारा में स्थानीय एवं कुछ दूरी पर मोरबी और राजकोट में अच्छी क्वालिटी के होटलों की व्यवस्था है। जहां उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार दो व्यक्तियों हेतु 1500/– रुपये से 5000/– रुपये राशि पर कमरे बुक कराए जा सकते हैं। होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था प्राप्त करने हेतु **श्री अरुण प्रकाश वर्मा (9810086759)** एवं **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949)** से सम्पर्क करें। यदि आप होटल/ सशुल्क व्यवस्था में रहना चाहते हैं तो शीघ्र (अभी आधी राशि) भेजकर होटल के कमरे बुक करवा लें, शेष राशि यात्रा से पूर्व/टंकारा पहुंचते ही अवश्य जमा करा देवें।

गणवेश – सभी आर्यजन सफेद कुर्ता, पजामा–धोती और संतरी पगड़ी या टोपी पहनकर इस महत्वपूर्ण उत्सव के साक्षी बनें। महिलाएं क्रीम या पीली भारतीय परंपरा की साड़ी/वस्त्र धारण करके समारोह की गरिमा/शोभा बढ़ाएं। सम्पूर्ण यात्रा एवं समारोह में टोपी/पगड़ी/पीत–वस्त्र अवश्य ही धारण करके रखें। ओम का बैज या 200वीं जयन्ती के लोगो का बैज अवश्य लगा कर रखें।

मौसम – गुजरात में टंकारा क्षेत्र में इन दिनों मौसम बहुत सुहावना रहेगा। केवल रात्रि में हल्का गर्म स्वेटर आदि की आवश्यकता हो सकती है, अन्यथा दिन में पंखे आदि चलते हैं। तापमान 30 डिग्री और 25 डिग्री के बीच रहेगा।

भ्रमण – टंकारा यात्रा के दौरान जो महानुभाव सम्मिलित होते हैं, वे भ्रमण आदि के लिए भी जाना चाहेंगे तो आसपास दर्शनीय स्थान द्वारका, गिर के वन, स्टैचू आफ यूनिटी, चम्पानेर का किला, साबरमती आश्रम, रानी की वाव, पिरोटन इजलैंड, कच्छ का रण, जरवानी वाटरफाल, सरदार सरोवर डैम, खम्भेलिया केव्ज, रामपारा वाइल्डलाइफ सेंचुअरी हैं। वहां की भ्रमण व्यवस्था किसी ट्रैवल एजेंट से करवाई जा सकती है। आप अपनी यात्रा की ट्रेन आदि की बुकिंग करवाते समय इसका भी विशेष ध्यान रख सकते हैं।

एक अनुरोध – जिस महान आत्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर हम जा रहे हैं, उन्होंने न जाने कितने कष्ट उठाएं, हमें हमारा आज देने के लिए। अत: यात्रा में कुछ कष्ट सम्भव है, हमारी ओर से पूर्ण व्यवस्थाएं की गई हैं, फिर भी सम्भव है कि कुछ परेशानी या कष्ट हो। स्वयं को इस कार्यक्रम का आयोजक समझकर अपने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्थाएं बनाएं, ऐसा हमारा निवेदन है।

दूसरा निकटतम
न दोनों जगह की
यक होगा। अत:

री पर है। यहां से
क राजकोट रेलवे
लवे टिकट ले लें,

वाले महानुभाव

व्यवस्था रहेगी।
र व्यवस्थानुसार

नीय विद्यालयों,
त के लिए बैडिंग

पद्मश्री पूनम सूरी, प्रधान
ट्रस्ट, टंकारा एवं डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी

सुरेन्द्र कुमार आर्य
अध्यक्ष, ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

आर्य (म. भारत), वेद प्रकाश गर्ग (मुम्बई), किशनलाल गहलौत (राजस्थान), सत्यवीर शास्त्री (विदर्भ), डॉ. रामकुमार पटेल (छत्तीसगढ़), भारतभूषण
रसिया (बिहार), महेन्द्र सिंह राजपूत (असम), डी.पी. यादव (उ.खण्ड), प्रबोधचन्द्र सूद (हिमाचल), एस. के. शर्मा (प्रादेशिक), देवेन्द्रपाल वर्मा (उ. प्रदेश),
बाहेती (अजमेर), जोगेन्द्र खट्टर (द.से.संघ), योगेश मुंजाल (टंकारा ट्र.), अजय सहगल (टंकारा ट्र.), देव कुमार (टंकारा ट्र.), सुरेन्द्र रैली (दिल्ली), सतीश

हर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, समस्त प्रमुख आर्य संगठनों एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में माननीय अधिकारीगण

ट्सएप्प, फेसबुक, एक्स, टेलिग्राम, ब्लॉग आदि पर इसका प्रचार करें और अपने संस्थान के नोटिस बोर्ड पर भी लगा दें

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की प्रारम्भिक दशा

(ई० 1863 से 1866 तक)

गतांक से आगे –

प्रारम्भ से अपने विचारों को प्रकट करने के लिए महर्षि जी तीन उपाय काम में लाते थे। व्याख्यान देते थे, विज्ञापन निकालते थे और शास्त्रार्थ के लिए ललकारते थे। व्याख्यान तो सभी स्थानों पर देते थे; जयपुर आदि में लिखित विज्ञापन भी प्रकाशित किए। पहले-पहल आपने ग्वालियर में भागवत के विषय में वैष्णव पण्डितों को चैलेंज दिया। परन्तु सब पौराणिक पण्डित इधर-उधर खिसक गए, कोई सामने नहीं आया। फिर जयपुर में महाराज के सामने व्यास बख्शीराम जी आदि से महर्षि जी का शास्त्रार्थ हुआ। इसमें भी पौराणिक पण्डित निरुत्तर हो गए। शास्त्रार्थों की बहुत धूम तो पुष्करराज में रही। यहां आप देर तक ब्रह्माजी के मन्दिर में निवास करते रहे। कभी पण्डों से, कभी ब्राह्मणों से और कभी संन्यासियों से शास्त्रार्थ की चर्चा चलती रहती थी। एक बार बहुत-से पण्डे लट्ठ लेकर महर्षि जी पर चढ़ आए। यों तो महर्षि जी अकेले ही पर्याप्त थे, परन्तु एक सहायक भी आ पहुंचा। ब्रह्मा जी के मन्दिर के पुजारी मानपुरी जी मोटा डण्डा लेकर पहुंच गए और पण्डों को भगा दिया।

अजमेर में लौटकर आपका पादरी रॉबिन्सन और पादरी शूलब्रेड से ईश्वर-जीव आदि विषयों पर 3 दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा। पादरियों को निरुत्तर होना पड़ा। वह महर्षि जी के सुधरे हुए विचारों और वाक्चातुरी से इतने प्रसन्न हुए कि महर्षि जी को एक पत्र लिखकर दे दिया, जिसमें लिखा कि हमने जीवनभर में ऐसा संस्कृत का विद्वान् नहीं देखा। ऐसे मनुष्य संसार में कम होते हैं।

इस प्रकार तीनों उपाय, जिनसे एक प्रचारक को काम लेना चाहिए, प्रारम्भ से ही महर्षि दयानन्द ने अंगीकार कर लिये थे। आगे इन्हीं साधनों का विकास होता गया। यहां तक कि महर्षि जी वाणी, लेख और शास्त्रार्थ – इस तीन प्रकार की युद्ध-सामग्री के पूरे अधीश्वर हो गए। – ***क्रमशः***

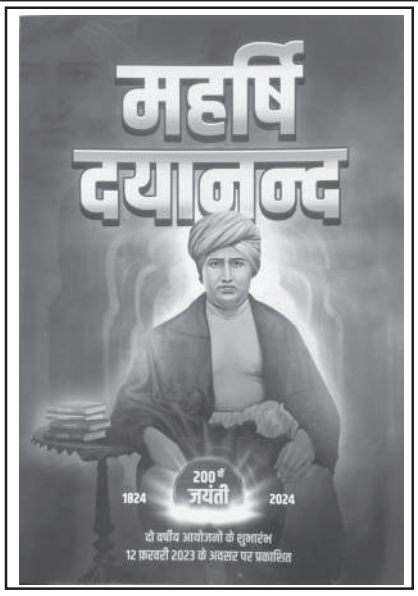

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित
जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

पृष्ठ 2 का शेष

को अपने अन्दर आने देते हैं। इससे कुछ वस्तु आकार ग्रहण करती है और उसमें से थोड़ा-सा कार्य भी सम्पन्न होता है पर शेष सब प्रभाव बिखर जाता है और फिर से प्रभाव- धारा में चला जाता है। हमें कौन-सी दिशा ग्रहण करनी है इस विषय में हमारी मति स्थिर नहीं होती, अत: जो अवस्थाएं और परिस्थितियां हमारे सामने आती हैं, हम अपने-आपको जैसे-तैसे उनके अनुकूल ही बना लेते हैं। जब कभी हम किसी अवसर पर समझौता न करने की लड़ाकू-वृत्ति धारण करने को उद्यत होते हैं तब भी हम वास्तव में अस्थिर और अवसरवादी ही होते हैं। महर्षि दयानन्द के अन्दर जो कुछ भी प्रविष्ट हुआ उस सबको उन्होंने अपने अधिकार में कर लिया, अपने अन्दर धारण किया, उसे सिद्धहस्तता के साथ वह आकार दे डाला जो उन्होंने उचित समझा और फिर उसे बाहर के वायुमण्डल में उन आकारों में स्थापित कर दिया जो उन्होंने उसके लिए उचित समझे। महर्षि दयानन्द में हमें जो लड़ाकापन और आक्रामकपन लगता है वह उनके आत्मनिर्धारण के बल का ही भाग था।

ये न केवल प्रकृति के महान् कार्यो के प्रति स्वयं नमनशील थे, अपितु उन्होंने जीवन और प्रकृति को भी नमनशील सामग्री के रूप में प्रयुक्त करने के अपने सामर्थ्य और अधिकार की दृढ़तापूर्ण स्थापना की थी। हम कल्पना कर सकते हैं कि हमारे अन्दर पौरुष और कर्म के स्रोत को अपर्याप्त देखकर उनकी आत्मा आज भी पुकार-पुकारकर कह रही है, "हे भारतीयों ! केवल अनन्तता के भाव में निवास करने और अनिश्चित रूप से विकास करने से संतुष्ट मत होओ किन्तु यह भी देखो कि परमेश्वर तुम्हें क्या बनाना चाहते हैं और उनकी प्रेरणा के प्रकाश में निर्धारित करो कि आगे तुम्हें क्या बनना है। उसे देखते हुए उसके अनुसार अपने-आप को गढ़ो, उसे जीवन में से गढ़कर तैयार करो। विचारक बनो, पर साथ ही कर्मठ भी बनो। आत्मा बनो, पर साथ ही मनुष्य भी बनो, परमेश्वर के सेवक बनो पर साथ ही प्रकृति के स्वामी भी बनो।" क्योंकि वे स्वयं यही कुछ थे, वे वह मनुष्य थे जिसकी आत्मा में परमेश्वर था, जिसकी आंखों में दिव्य दृष्टि थी और जिसके हाथों में उस दिव्य दृष्टि के अनुसार जीवन में से आकृतियां गढ़ देने की शक्ति थी। यहाँ 'घड़ना' शब्द का प्रयोग ही उपयुक्त है। क्योंकि वे स्वयं चट्टान थे और उन्होंने मानों चट्टान पर भारी चोटें मार-मारकर वस्तुओं की आकृति घड़ी थी। महर्षि दयानन्द के जीवन में हमें हमेशा आध्यात्मिक व्यावहारिकता का शक्तिशाली प्रवाह दिखायी देता है। सर्वत्र उनके काम पर स्वत: स्फूर्त शक्ति और निश्चयात्मकता की छाप है। प्रारम्भ में ही हम देखते हैं-व्यावहारिक अन्तर्दृष्टि की यह कितनी दिव्य झांकी है कि वे फिर से सीधे भारतीय जीवन और संस्कृति के ठेठ मूल तक पहुंचे और उसके आमूल नवीन जन्म के लिए उन्होंने उसके सबसे पहले निकले फूल से बीज प्राप्त किया और यह कैसे महान् बौद्धिक साहस का कार्य था कि उन्होंने इस धर्मग्रन्थ वेद का उद्धार किया जो अज्ञान-भरे भाष्यों से विकृत हो चुका था, जिसका असली अभिप्राय भुलाया जा चुका था और जिसे लोग गलतफहमी के कारण अपने दर्जे से घटाकर पुरानी जंगली जातियों के लेखों के बराबर समझने लगे थे। उन्होंने वेद की यह वास्तविक श्रेष्ठता पहचानी कि यह वह धर्मग्रन्य है जिसमें इस देश और प्राचीन राष्ट्र को बनाने वाले पूर्वजों की गहरी और प्रबल भावना छिपी है, वह धर्मग्रन्थ जो दिव्य ज्ञान, दिव्य पूजा और दिव्य कर्म की चर्चा से ओत-प्रोत है।

मैं नहीं जानता कि महर्षि दयानन्द का ओजस्वी और मौलिक भाष्य वेद पर प्रामाणिक शब्द के रूप में सर्वमान्य होगा या नहीं। मैं स्वयं सोचता हूँ कि इस अगाय और आश्चर्यजनक इश्वरीय ज्ञान (वेद) के अन्य रूपों का स्पष्टीकरण करने का कुछ सूक्ष्म कार्य अब भी शेष है लेकिन इसका बहुत महत्त्व नहीं। मुख्य बात तो यह है कि उन्होंने वेद को भारत की युगों से चली आ रही चट्टान के रूप में ठीक-ठीक ग्रहण कर लिया और उसमें अपनी सूक्ष्मदर्शी दृष्टि द्वारा यौवन की सम्पूर्ण शिक्षा या समग्र मनुष्यता ओर सम्पूर्ण राष्ट्रीयता को देखकर इस चट्टान पर इनका भवन बनाने का साहसपूर्ण विचार किया। एक अन्य महान् आत्मा और शक्तिशाली कार्यकर्ता राममोहन राय ने बंगाल के नव-जागरण का कार्य अपने हाथ में लिया। बंगाल तब सरिताओं और धान के खेतों के किनारे गहरी नींद में सोया पड़ा था। उन्होंने उसे घोर प्रमादभरी निद्रा से झकझोर कर जगाया और कितने महान् ध्येय तक पहुँचा दिया। पर राममोहनराय थोड़ी दूर चलकर उपनिषदों पर ही रुक गये, महर्षि दयानन्द ने उनसे परे तक देखा और यह पहचाना कि हमारा वास्तविक मूलभूत बीज है वेद। उनके अन्दर राष्ट्रीय सहज-बोध था और वे इसे आलोकित करने में अर्थात् इसे सहजबोध के स्थान पर बोधि एवं अन्तर्दृष्टि बनाने में समर्थ हुए। इसलिए उससे जो रचनाएं सृष्ट हुई हैं वे चाहे प्रचलित परम्पराओं के कितनी ही विरुद्ध क्यों न हों, नि:सन्देह गहरे रूप से राष्ट्रीय है।

राष्ट्रीय होने का अभिप्राय एक स्थान पर रुक जाना नहीं, बल्कि अतीत की संजीवनी शक्ति ग्रहण करके उसे वर्तमान जीवन की धारा में उडेल देना ही वास्तव में पुनरुद्धार और नवनिर्माण का सबसे अधिक शक्तिशाली उपाय है। वर्तमान सांचे में जीवन भरने के लिए महर्षि दयानन्द अपने कार्य से भूत के इस प्रकार के तत्त्व और भावना को पुनरुज्जीवित करते हैं। हम देखते हैं कि उन्होंने अपने जीवन की तरह अपने कार्य में भी उस भूत को ग्रहण कर रखा है जो निर्मल शक्ति का प्रथम प्रवाह है, अपने आदिस्रोतों से सीधा आने के कारण पवित्र है। अपने मूलभूत नियम के निकट है और इसीलिए नित्य-नूतन हो सकने योग्य किसी शाश्वत तत्त्व के भी अत्यन्त समीप है। उनके व्यक्तित्व की भांति उनके कृतित्व में भी हम स्वत:स्फूर्त निश्चित प्रवत्न और प्रवल रचना की वही शक्ति पाते हैं जो पूर्ण स्पष्टता, सत्य और ईमानदारी के आन्तरिक तत्त्व से आती है। किसी व्यक्ति का अपने मन में साफ होना, अपने प्रति और दूसरों के साथ पूर्णतया सच्चा और सरल होना और अपने कार्य की परिस्थितियों तथा साधनों के साथ पूरे तौर से ईमानदार होना यह हमारी टेढ़ी पेचीदी और लड़खड़ाने वाली मनुष्य जाति में एक दुर्लभ देन है। आर्य कार्यकर्त्ता की यही भावना होती है और यही है तेजोमय सफलता पाने का निश्चित रहस्य। कारण, प्रकृति अपने द्वारों पर टीक, सच्ची और पहचानने योग्य खटखटाहट को सदा ही पहचान लेती है और अनुरूप सजगता तथा प्रयत्न के साय उसका उत्तर भी देती है। यह उचित ही है कि उस आचार्य की आत्मा अपने अनुयायियों पर अपना चिह्न छोड़ जाये और भारत में किसी स्थान पर ऐसी संस्था विद्यमान हो जिसके बारे में यह कहा जा सके कि जब कभी कोई ऐसा काम दिखायी दे जो आवश्यक और उचित हो तो उसे करने के लिए उस संस्था से कार्यकर्ता आगे आयेंगे, साधन मिलेंगे ओर वह काम अवश्य पूरा होगा।

सत्य एक सरल सी वस्तु लगती है पर है बहुत कठिन। सत्य ही था वैदिक शिक्षा का मूल-मन्त्र, आत्मा में सत्य, दृष्टि में सत्य, संकल्प में सच्चाई और कार्य में सच्चाई। क्रियात्मक सत्य, आर्यत्व, आन्तर निष्कपटता, आर्जव, हृदय की अटल सच्चाई, स्पष्टता, वाणी तथा कर्म में प्राजिंल उदात्तता-यह सब प्राचीन आर्य नैतिकता में स्वभाव से ही निहित था। यह सब शुद्ध और अविकृत शक्ति का रहस्य है और इस बात का चिह्न है कि मनुष्य प्रकृति से बहुत दूर नहीं हट गया। यही ईश्वर के सच्चे पुत्र, दिवस्पुत्र होने का प्रमाण है। यही वह छाप है जिसे महर्षि दयानन्द अपने पीछे छोड़ गये और यही उनका चिह्न और प्रतिमा होनी चाहिए जिसके द्वारा कोई कार्य इस रूप में पहचाना जा सके कि यह उनसे प्रवर्तित है। ईश्वर करे उनकी भावना शुद्ध, अविकृत, अपरिवर्तित रूप से भारत में काम करे और हमें वह वस्तु फिर से देने में सहायक हो जिसकी हमारे जीवन में अत्यन्त आवश्यकता है अर्थात् शुद्ध शक्ति, उच्च स्पष्टता, सूक्ष्मदर्शिनी दृष्टि, सिद्धहस्तता और श्रेष्ठ एवं प्रभुत्वपूर्ण सत्यता।

– वैदिक मैगजीन
वर्ष 1915 में प्रकाशित

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव

10-11-12 फरवरी, 2024 : जन्मभूमि टंकारा, मौरवी (गुजरात)

आर्यसमाज मन्दिरों एवं संस्थाओं से विशेष निवेदन

समस्त आर्यसमाजें, गुरुकुल, विद्यालय एवं आर्य संस्थाएं स्मरणोत्सव की तिथियों 10-11-12 फरवरी, 2024 में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखें

आर्यसमाज मन्दिरों, संस्थाओं एवं घरों की साज-सज्जा करें

1 फरवरी से अपने आर्य समाज मन्दिरों, संस्थाओं और घरों की विशेष सज्जा करें, बिजली की लड़ियों आदि से और सज्जा ऐसे भी करें जो दिन में भी दिखाई दे।

अपने नाम एवं फोटो के साथ होर्डिंग/बैनर लगवाएं

समस्त आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थान, विद्यालय, गुरुकुल/संस्थाओं के अधिकारीगण अपने नाम एवं फोटो के साथ अधिकाधिक होर्डिंग/बैनर क्षेत्र में लगवाएं, जिससे आर्यसमाज के साथ-साथ उनकी भी जान-पहचान बन सके।

प्रमुख स्थानों पर पर्मानैंट होर्डिंग लगवाएं

अपने क्षेत्र के स्थानीय नेताओं, निगम पार्षदों, स्थानीय विधायकों एवं सांसद के साथ स्थानीय पार्टियों के जिलाध्यक्ष, मंडलपति आदि से सम्पर्क करके उनके फोटो के साथ 200वीं जयन्ती के शुभकामना होर्डिंग/बैनर प्रमुख चौक/बाजार आदि स्थानों पर लगवाएं।

व्यक्तिगत रूप से हम क्या करें

समस्त आर्यजन अपने घरों पर ओ3म् ध्वज, 200वीं जयन्ती का शुभकामना बैनर लागाएं। जन्मोत्सव के दिन सामर्थ्यानुसार पास-पड़ोस में मिष्ठान/प्रसाद वितरण करें और सोशल मीडिया पर बधाई सन्देश भेजें **# दयानन्द 200** पर टैग करें।

जो टंकारा नहीं पहुंच पा रहे

जिन आर्यसमाजों/विद्यालयों/ संस्थानों के अधिकारी/ कार्यकर्ता/ सदस्यगण/परिवार टंकारा के आयोजन में नहीं पहुंच पा रहे। 10, 11 एवं 12 फरवरी का सम्पूर्ण आयोजन आर्यसन्देश टीवी पर लाईव देखें और जनसामान्य को दिखाने के लिए स्क्रीन आदि की व्यवस्था करें।

अपने समाज, संस्थान के समस्त सदस्यों, कार्यकर्ताओं के परिवार के साथ महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती के भव्य एवं विशाल ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बनें

टंकारा पहुंचने वाले आर्य संगठन एवं आर्यजन पंजीकरण कराएं

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव महासम्मेलन, टंकारा में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक आर्य महानुभाव अनिवार्य रूप से रजिस्ट्रेशन कराकर व्यवस्थाओं में सहयोगी बनें। रजिस्ट्रेशन के लिए लॉगइन करें - **www.thearyasamaj.org**

रेल टिकट वेटिंग में हो तो

जो महानुभाव रेल मार्ग से टंकारा जाना चाह रहे हैं वे अपना रेलवे आरक्षण राजकोट के लिए तुरन्त करा लें। चाहे टिकट वेटिंग मिले या कन्फर्म। यदि **टिकट वेटिंग हो तो 9311413920 पर व्हाट्सएप्प भेज दें।** अधिक जानकारी के लिए **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी 8010293949** से सम्पर्क करें

व्यवसायी महानुभाव एवं उद्योगपति

अपने प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों-सहयोगियों के साथ यज्ञ करें। कर्मचारियों को मिठाई, वैदिक साहित्य की कोई पुस्तक, ईनाम के रूप में 200वीं जयन्ती का सिक्का अथवा अन्य कुछ अवश्य ही वितरित करें।

व्यवसायी वर्ग यदि इस अवसर पर कोई भी किसी भी प्रकार की स्कीम दे सकें तो अवश्य दें। किसी भी सामान/खरीद पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जयन्ती से सम्बन्धित कुछ उपहार/छूट अवश्य देने का प्रयास करें।

वैदिक साहित्य प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

जो प्रकाशक अथवा पुस्तक विक्रेता अपने स्टाल टंकारा में लगाना चाहें वे अपना स्टाल तत्काल बुक कराएं। स्टालों की संख्या सीमित है। स्टाल 2100/- रुपये में उपलब्ध कराया जाएगा। बुकिंग हेतु राशि का चैक '**महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा**' भेजे। अधिक जानकारी के लिए स्टाल व्यवस्थापक **श्री संजीव आर्य (9868244958)** से सम्पर्क करें।

पृष्ठ 2 का शेष

जन्मभूमि टंकारा (मौरवी-गुजरात) से क्या बिगुल बजने वाला है?

हमारे यहाँ तो ऋषि-मुनि इन सब बिमारियों से बचने के लिए ब्रह्मचर्य जैसी ठोस मजबूत चेतना से परिचित करा गये हैं।

लड़ाई सिर्फ एक मोर्चे पर नहीं है। आज हम अपनी संपूर्ण शिक्षा, विमर्श, पाठ्यचर्या आदि को उलटें, तो हमारे एतिहासिक नायकों की कही गयी बातों में एक भी शायद ही कहीं मिलें। फिर देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं, टेलीवीजन चैनलों की संपूर्ण सामग्री पर ध्यान दें जहाँ ये लिखा जाना चाहिए था कि "वैदिक संस्कृति" के साथ चलो, आज वहां मोटे-मोटे अक्षरों में छापा जाता है कि 'कंडोम' के साथ चलो! यह सब पढ़ने में जितनी शर्म महसूस होती है। अब उतना ही लिखने में भी शर्म महसूस हो रही है। लेकिन क्या करें जिस तरह आज ये सब परोसा जा रहा है तो शायद कल कुछ भी बचाने को हमारे पास शेष न रहे।

इस अंधानुकरण मानसिकता से समाज का घोर सांस्कृतिक पतन होता जा रहा है। इसी की परिणति बच्चों समेत सबको खुले व्यभिचार की स्वीकृति देने में हो रही है। सिनेमा, विज्ञापन आदि उद्योग हमारे बच्चों, किशोरों में ब्रह्मचर्य की उलटी गतिविधियों की प्रेरणा जगाते हैं। यह हमारे सबसे अग्रणी पब्लिक स्कूलों की शिक्षा है। ऋषियों-महर्षिओं समेत सभी महापुरुषों की सारी बातें कूड़े में और विकृत भोगवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसीलिए अधिकतर लोग भोग के अलावा नितांत उद्देश्यहीन जीवन जीते हैं। लोगों को सिर्फ उत्तेजक भोजन, उत्तेजक सिनेमा, उत्तेजक विज्ञापन, उत्तेजक संगीत, चित्र, मुहावरे आदि सेवन करने को परोसे जा रहे हैं।

एक ओर कथित बाबा देश धर्म के नाम पर हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति की गरिमा को तार-तार कर रहे है तो दूसरी तरफ इनके कारनामों का फायदा उठाकर विरोधी धर्मांतरण करने में लगे पड़े है। युवा बहनें भी इस धार्मिक कुचक्र का शिकार बनाई जा रही है। चारों ओर चुनौती है, धर्म से लेकर शिक्षा तक संस्कार से लेकर संस्कृति तक। सामाजिक उन्नति के मूलमंत्रों और सार तत्वों का खुलेआम दहन किया जा रहा है। बचाव का कोई सहारा नहीं दिख रहा है। इस कारण इस डूबती संस्कृति को बचाने के लिए सिर्फ और सिर्फ आर्य समाज ही एक टापू के रूप में दिखा दे रहा है।

देश ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों सामाजिक-समस्या गहरी और व्यापक हो रही है। हमारी उन्नति के मार्ग में ऐसे काफी विघ्न हैं। विवादों के बाजार में राजनीती सर चढ़कर बोल रही है। छुट-पुट नेता चुनाव जीतने के लिए जाति और धर्म के नाम पर भाषण दे जाते है। लेकिन कितने लोग मानते हैं कि उन्हें अपनी राजनीति से ज्यादा धर्म से प्यार हो? आज एक आर्य समाज ही है जो स्वदेश हितार्थ सदा कमर कसे तैयार रहता है। जिसकी अपने पूर्वजों-महापुरुषों और अपनी वैदिक संस्कृति पर आंतरिक श्रद्धा और भक्ति है। किन्तु ये काफी नहीं है। हमारी लड़ाई लम्बी है जो सभी आर्यों के सहयोग से पूर्ण हो सकती है। हमारी आध्यात्मिकता और देश ही हमारा जीवन रक्त है। यदि यह साफ बहता रहे, यदि यह शुद्ध है तो सब कुछ ठीक है। चाहे देश की निर्धनता ही क्यों न हो, यदि खून शुद्ध है, तो संसार में हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा। यदि इस खून में ही व्याधि उत्पन हो गयी तो क्या होगा! यह आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। इन सब विसंगतियों, कुप्रथाओं, अंधविश्वासों से हो रही सांस्कृतिक हानि से किस प्रकार बचना है? कैसे इस देश को पुन: राम और कृष्ण के विचारों भूमि बनाना है? किस प्रकार महषि देव दयानन्द जी के सपनों को पूरा करना है? यही सब विचार करने हेतु टंकारा में ज्ञान ज्योति महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। आशा है आप सभी लोग देश-विदेश के जिस भी कोनें में होंगे इस आयोजन हिस्सा बनकर, महर्षि जी के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हुए अपने पूर्ण सहयोग से देश और समाज हित के इस कार्य में अपनी वैचारिक आहुति जरुर देंगे तथा अन्य लोगों को प्रेरित भी करेंगे। जिस टंकारा में जन्म लेकर स्वामी जी ने सामाजिक चेतना की मशाल जलाई थी अब समय है उसी टंकारा से उनके 200वें जन्मदिवस पर फिर से बिगुल बजाना है।

- सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 08 जनवरी, 2024 से रविवार 14 जनवरी, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 11-12-13/01/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 जनवरी, 2024

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज का सन्देश लाखों-करोड़ों लोगों तक पहुंचाने के लिए मिसकॉल सेवा

प्रचार के लिए एक बोर्ड पर लिखकर आर्यसमाज में लगाए

प्रतिष्ठा में,

मिस कॉल सेवा - सभा ने चार मिस कॉल सेवा आरंभ की हैं। यह अपने आप में महत्वपूर्ण कदम है और विशेष भी। आप अपने हर पैम्पलेट, पोस्टर, होर्डिंग, बैकड्रॉप, स्लाइड पर इनका अवश्य ही उल्लेख करें। यह सुविधा वर्तमान में सभा द्वारा संचालित समस्त योजनाओं एवं 200वीं जयन्ती से सम्बन्धित विशेष योजनाओं की जानकारी हेतु प्रारम्भ की गई है। आप देखेंगे कि इनके उपयोग से सहज ही लाखों लोगो तक ये सन्देश पहुंचते जाएंगे -

1. **जानिए, महर्षि दयानन्द को मिस कॉल करें - 8447 200 200** - यह सुविधा महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों के विषय में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रारम्भ की गई है।

2. **जानिए, यज्ञ के विषय में हर बात - मिसकॉल करें -9868 47 4747** - यह सुविधा यज्ञ से सम्बन्धित समस्त जानकारी के लिए प्रारम्भ की गई है। इसमें आपको इंग्लिश में और हिन्दी माध्यम से यज्ञ की सब जानकारी, यज्ञ का विज्ञान, यज्ञ का इतिहास, यज्ञ कैसे करें, यज्ञ क्यों करें, यज्ञ सीखने का तरीका, यज्ञ मन्त्रों की पुस्तक, आदि, सब इससे प्राप्त हो जाएगी।

3. **जानिए, वर्तमान में आर्यसमाज की गतिविधियां मिसकॉल करें - 8750200300** - सभा की अनेक योजनाएं चल रही हैं। 200वीं जयन्ती के लिए बनी योजना भी चल रही है। सोशल मीडिया, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशंस, सामाजिक सेवा के लिए और भी बहुत कुछ आप इस नए मिस कॉल नं. पर मिसकॉल करके सब कुछ जान पाएंगे और वहां से उनके लिंक पर जाकर उन योजनाओं से भी सीधे जुड़ सकेंगे।

मिसकॉल सेवा का उपयोग - अपने स्मार्टफोन में इन मिसकॉल नं. को सेव करें (सेव करना न चाहें तो न करें - सेव न करने से भी यह अपना काम करेगा) और जिस विषय में भी आपको जानकारी चाहिए, उस पर कॉल करें। आपकी कॉल अपने आप कट जाएगी और आपको एक संदेश/मैसेज प्राप्त होगा।

आपके मोबाइल पर प्राप्त हुए उस मैसेज में दिए गए लिंक को टच करने पर सारी जानकारी खुल जाएगी। उनमें से जिस-जिस विषयों को आप डाउनलोड करना चाहें, उसे डाउनलोड कर लें। अब सब जानकारी आपके फोन पर होगी, आपसे भी यदि कोई इस प्रकार की जानकारी मांगता है तो आप उसे भी फारवर्ड कर सकते हैं और डिटेल में बता भी सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह